9
ऋतुराज
(जन्म : 1940 ई.)

जीवन परिचय –

ऋतुराज का जन्म 10 फरवरी सन् 1940 को भरतपुर में हुआ। राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से उन्होंने अंग्रेजी में एम.ए. किया। चालीस वर्षों तक अंग्रेजी साहित्य के अध्यापन के बाद अब सेनानिवृत्त होकर वे जयपुर में रहते हैं। उनके अब तक आठ कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमें एक मरणधर्मा और अन्य, पुल पर पानी, सुरत निरत और लीला मुखारविन्द प्रमुख हैं। उन्हें सोमदत्त, परिमल सम्मान, मीरा पुरस्कार, पहल सम्मान तथा बिहारी पुरस्कार मिल चुके हैं।

मुख्यधारा से अलग समाज के हाशिए के लोगों की चिंताओं को ऋतुराज ने अपने लेखन का विषय बनाया है। उनकी कविताओं में दैनिक जीवन के अनुभवों का यथार्थ है और वे अपने आसपास के रोज़मर्रा में घटित होने वाले सामाजिक विसंगतियों और विडंबनाओं पर गहरी निगाह डालते हैं। यही कारण है कि उनकी भाषा अपने परिवेश और लोक जीवन से जुड़ी हुई है।

पाठ परिचय –

'कन्यादान' कविता में माँ बेटी को स्त्री के परंपरागत 'आदर्श' रूप से हटकर सीख दे रही है। कवि का मानना है कि समाज–व्यवस्था द्वारा स्त्रियों के लिए आचरण संबंधी प्रतिमान गढ़ लिए जाते हैं। वे आदर्श के मुखौटे में बंधन होते हैं। 'कोमलता' के गौरव में 'कमजोरी' का उपहास छिपा रहता है। लड़की जैसा न दिखाई देने में इसी आदर्शीकरण का प्रतिकार है। बेटी, माँ के सबसे निकट और उसके सुख–दुःख की सहेली होती है। इसी कारण उसे अंतिम पूँजी कहा गया है। कविता में कोरी भावुकता नहीं, बल्कि माँ के संचित अनुभवों की पीड़ा की प्रामाणिक अभिव्यक्ति है। इस छोटी–सी कविता में स्त्री जीवन के प्रति ऋतुराज की गहरी संवेदना अभिव्यक्त हुई है।

कन्यादान

कितना प्रामाणिक था उसका दुख
लड़की को दान में देते वक्त
जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो

लड़की अभी सयानी नहीं थी
अभी इतनी भोली सरल थी
कि उसे सुख का आभास तो होता था
लेकिन दुख बाँचना नहीं आता था
पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की
कुछ तर्कों और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की।

माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं।
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन है स्त्री जीवन के

माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की–जैसी दिखाई मत देना।

कठिन शब्दार्थ

प्रामाणिक	–	प्रमाणों से सिद्ध	**लयबद्ध**	–	सुरताल
सयानी	–	बड़ी	**रीझना**	–	मन ही मन प्रसन्न होना
आभास	–	अहसास	**आभूषण**	–	गहना
बाँचना	–	पढ़ना	**शाब्दिक**	–	शब्दों का
भ्रम	–	धोखा			

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. कवि ने अन्तिम पूँजी किसे बताया था?
   (क) माँ को (ख) लड़की को (ग) स्त्री जीवन को (घ) आग को
2. दुख बाँचना किसे नहीं आता था?
   (क) लड़की को (ख) माँ को (ग) समाज को (घ) आभूषणों को

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

3. कवि ने स्त्री जीवन का बंधन किसे बताया है?
4. माँ ने लड़की को कैसा नहीं दिखने के लिए कहा है?
5. 'अपने चेहरे पर मत रीझना' का क्या तात्पर्य है?
6. माँ को अपनी बेटी अन्तिम पूँजी क्यों लग रही थीं?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

7. आपके विचार से माँ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसी मत दिखाई देना?
8. माँ ने बेटी को क्या–क्या सीख दी?
9. ''वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
   बंधन हैं स्त्री जीवन के''
   उपरोक्त पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए?
10. 'कन्यादान' कविता में माँ की मूल चिन्ता क्या है?

निबंधात्मक प्रश्न –

11. आपकी दृष्टि में कन्या के साथ दान की बात करना कहाँ तक उचित है? समझाइए।
12. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
    (क) माँ ने कहा पानी में झाँककर .... जलने के लिए नहीं।
    (ख) वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह ....पर लड़की–जैसी दिखाई मत देना।